॥ षष्ठ अध्याय ॥

('अमृत और विष' उपन्यास की भाषाशैली)

अमृत और विष उपन्यास की भाषा शैली ।

प्रत्येक साहित्य विधा की अपनी विशेषता है और अपने अपने गुण भी है । किसी भी विचार, भावना या सिध्दांत को भाषाबध्द कर देने से उसे साहित्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता । साहित्य विचार या भावना को ही अभिव्यक्ति नहीं देता उसे कलात्मक रुप भी देता है । ऐसे करने के लिए विशेष शिल्प अपनाता है उस शिल्प को अंग्रेजी मे टेकनिक कहते है ।

शैली के संबंध में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है जितनी स्वाभाविक अर्थात पात्रानुकूल और स्थिती के अनुरुप शैली होगी उतना ही उसका प्रभाव पडेगा । भगीरथ मिश्र कहते है –

"उपन्यास की शैली संकेतात्मक न होकर विवृत्तात्मक होती है, क्योंकि उसे पूर्ण वातावरण और उसमें रस और भावों की सृष्टी करनी होती है ।" १

अतः पात्र की शिक्षा, संस्कृति और मानसिक धरातल के अनुरुप ही उसकी भाषा होनी चाहिए इसके लिए पाण्डित्यपूर्ण, व्यंगमुक्त भाषा से लेकर ठेट प्रादेशिक और ग्राम्य भाषा तक का प्रयोग यथावश्यक रुप में किया जाता है । शैली के सम्बध में सामान्य रुप से ये बाते ध्यान में रखनेपर भी एक उपन्यासकार की शैली दूसरे से भिन्न होती है । प्रत्येक का अपना निजी अनुभव क्षेत्र, वातावरण, संस्कार एवं शिक्षा होती है अतः जीवन को देखने और उसको चित्रित करने के अपने निजी ढंग है ।

अपना मनोभाव दूसरोंतक पहुँचाने के लिए साहित्यकार के पास भाषा ही एकमात्र साधन है । अपनी अनुभूतियों और मनोभाव को प्रभावशाली रुप में व्यक करने के लिए वह कही चित्रों की कही लययुक्त शब्दयोजना की और कही गंभीर समर्थ भाषा की सहाय्यता लेता है । यह बात नागरजी पर पूरी तरह से चरितार्थ है क्योंकि वे भाषा को अपना साधन बनाकर भिन्न भिन्न तरह से उसका उपयोग करते है । इस उपन्यास में भाषागत विशेषताएँ इसप्रकार मिलती है ।

१) वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग ।

२) पात्रानुकूल भाषाशैली का प्रयोग ।

३) व्यंग्यात्मक भाषाशैली का प्रयोग ।

४) भावात्मक भाषाशैली का प्रयोग ।

नागरजी ने अमृत और विष में जनसाधारण की भाषा का प्रयोग किया है । उन्होने सर्वत्र सरल, सहज, पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है । पात्रानुकूल संवाद कही बोलचाल की भाषा में कही संस्कृतनिष्ठ कही उर्दू - मिश्रित तो कही अंग्रेजीमिश्रित भाषा में है ।

पुलीगुरु और उनकी पत्नी ब्रजभाषा का प्रयोग करते है -

"हजार बार कहते हैं गे कि लडकन से न अटको, लडकन से न अटको । ई नासपीटे कम्मी-उम्मी की सौबत में लगा रमेश भी कर रहा हैगा । "२ शेखजी उर्दू मिश्रित हिन्दी का प्रयोग करते है ।

"यह सिर अब दिन रात खुदा की इबादत में झुकने का आदि हो गया है । मुझे इस जंजाल में मत फंसा ।" ३ सरकारी अफसर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते है ।

" यू हैव कम फ्राम कच्ची ? " ४

इसप्रकार पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग उपन्यास की भाषा को यथार्थवादी बनाता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में भाषा के अनेक रुप मिलते है । इसमें बोलचाल की ठेठ भाषा से लेकर संस्कृतनिष्ठ परिमार्जित भाषा तक के अनेक भाषा रुपों का कुशलता पूर्वक प्रयोग हुआ है । भाषा सर्वत्र पात्र और भाव के अनुरुप है । पात्रो के बौध्दिक स्तर, शिक्षा दीक्षा के अनुसार ही भाषा का प्रयोग हुआ है ।

उपन्यास मे भाषा की चित्रात्मक शक्ति से पात्रों का चरित्र सजीव रुप में प्रकट हुआ है । पुलीगुरु के क्रोधी स्वभाव के यथार्थ चित्रांकन का एक उदाहरण - क्या किया तुमरे रमेश ने, बोलो । ससुर जब देखो तब अपने लडकन का पक्ष । सारे खोट मेरे ही हैंगे । इसको इस बात का भी पता नहीं कि मैं न होता तो लौंडे ससुर कहाँ से आते । भाषा की यथार्थता के कारण ही उपन्यास में वर्णित चित्र सजीव रुप धारण कर पाठक के समक्ष उपस्थित हो जाते हैं ।

लेखक ने भाषा के विविध प्रयोगों के द्वारा अपनी कथा को प्रभावशाली बनाया है । कथा का केंद्र लखनऊ है और पात्रो के संवादो में लखनऊ की विभिन्न बोलीयोंका सफलता पूर्वक प्रयोग हुआ है

अरविंद शंकर से संबंधित कथा की भाषा प्रवाहता प्रौढ, चिंतन प्रधान तथा परिमार्जित है । भाव के अनुरुप प्रवाहमयी, ओजमयी, माधुर्यमयी भाषा का प्रयोग हुआ है –

"वो सरकारी दरबारी कॉंग्रेसी भेडों की भीड होगी । जिन्हें नगर कॉंग्रेसाध्यक्ष महोदय मेरी खुशामद मे हॉंककर लाएगें । उन्हे गलत फहमी हो गई है कि मैं पंडित जवाहरलालजी का दुलारा हुा "५

अरविंद शंकर के ये उद्गार उनके हृदय का आक्रोश व्यक करते है । सजीव भाषा का एक और उदाहरण –

"दुसरी ओर स्थायी रसोई वैसी ही उजडी हुई पडी थी जैसे दुश्मन के हवाई हमले के बाद बस्ती के खण्डहर या किसी के द्वारा मारे गये आदमी की खून से लथपथ लाश पडी हो ।" ६

गंभीर विषयों के प्रतिपादन में भी लेखक ने सरल भाषा का प्रयोग किया है । गंभीर विषयों के संप्रेषण में समर्थ भाषा का एक उदाहरण –

"चेतना भी भौतिक पदार्थ ही है, और वह सुक्ष्म भी हो सकती है । उस हर वस्तू के लिए जो हमें अपने चर्मचक्षुओं से नही दिखलाई देती, यह कहना गलत है कि उसका अस्तित्व ही नही है । भौतिक जगत दूर दूर तक दिखाई देकर भी कही एक जगह अपने आप में सिमटा हुआ केन्द्रीभूत भी हो सकता है जैसे बीज में सिमटा हुआ विशाल वटवृक्ष होता है । " ७

अरविंद शंकर की जीवन कथा सें संम्बधित उपन्यास आत्मकथात्मक या डायरी शैली में रचित है । और अरविंद शंकर द्वारा रचित उपन्यास वर्णन शैली में है । शैली की दृष्टी से "अमृत और विष" उपन्यास में उपन्यास के भितर उपन्यास शिल्प का प्रयोग हुआ है ।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः नागरजीने अपनी सरल, स हज, प्रवाहपूर्ण, चिन्तन युक्त गम्भीर शैली और भाषा के विविध रुपों के व्दारा अपने कथ्य को सारगर्भित और प्रभावी बनाया है ।

नागरजीने पाण्डित्यपूर्ण, व्यंग्यमुक्त भाषा से लेकर प्रादेशिक भाषा तक का प्रयोग यथावश्यक रुप में किया है । वर्णनात्मक भाषा के प्रयोग में बाट पीडितों का वर्णन, शादी–बारात का वर्णन सुसंबध्द रीति से किया है । पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ब्रजभाषा उर्दू–मिश्रीत और कही अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है । उन्होने इस उपन्यास में एक विशेष शिल्प जिसे अंग्रेजी में टेकनिक कहते है । अपनाया है कि उपन्यास के भीतर उपन्यास लिखा है ।

लेखकने जिस यथार्थवाद को अपना कथ्य बनाया है उसे हास्य और व्यंग्य का स्पर्श देकर अत्यंत तीखा और प्रबल बना दिया है । उनके हास्य और व्यंग्य की परिधि में समूचा आधुनिक जीवन आया है । सामान्य जनों की बातचीत और कथोपकथन में प्रयुक्त उनकी तच्छेव्दार भाषा और बोलचालकी यथार्थ शैली सीधी मन में उतर जाती है । उनकी भाषा लोक जीवन सापेक्ष और कहावतों, मुहावरों से पूर्ण है । उनकी आत्मकथात्मक और वर्णन शैली इतनी सशक्त है कि पात्रों के सजीव चित्र हमारी आँखो के आगे साकार हो जाते है और अपने व्यक्तित्व की गहरी छाप मनपर छोड जाते है ।

संदर्भ

१) डॉ. भगीरथ मिश्र – 'काव्यशास्त्र' पृ.८१

२) अमृतलाल नागर – 'अमृत और विष' पृ.३२१

३) वहीं – पृ.८२

४) वहीं – पृ.१८४

५) वहीं – पृ.९

६) वहीं – पृ.५१३

७) वहीं – पृ.६४४